प्रपत्र – 33

57

कार्यालय मुख्य अभियन्ता स्तर–1
उत्तराखण्ड, लोक निर्माण विभाग
देहरादून

(भूगर्भीय आख्या)

आख्या संख्या 47 / 1993 / 09

जनपद रूद्रप्रयाग में बांसवाड़ा से किरोदी जलई गैर कण्डारा मोटरमार्ग हेतु प्रस्तावित समरेखन की भूगर्भीय निरीक्षण आख्या।

प्रमाणित छाया प्रति

सहायक अभियन्ता
निर्माण खण्ड लो०नि० वि०
ऊखीमठ (रूद्रप्रयाग)

मार्च 2009

16/4/09

जनपद रूद्रप्रयाग में बांसवाड़ा से किरोदी जलई गैर कण्डारा मोटरमार्ग हेतु प्रस्तावित समरेखन की भूगर्भीय निरीक्षण आख्या।

1. निर्माण खण्ड, लोक निर्माण विभाग ऊखीमठ के अन्तर्गत 4.00 कि0मी0 लम्बाई में बांसवाड़ा से किरोदी जलई गैर कण्डारा मोटरमार्ग का निर्माण किया जाना प्रस्तावित है। अधिशासी अभियन्ता निर्माण खण्ड, लोक निर्माण विभाग ऊखीमठ के अनुरोध पर प्रस्तावित समरेखन का अधोहस्ताक्षरी द्वारा दिनांक 22.1.2009 को सम्बन्धित ~~सहायक अभियन्ता~~ कनिष्ठ अभियन्ता श्री महेश काला के साथ निरीक्षण किया गया।

2. राज्य योजना के अन्तर्गत बांसवाड़ा से किरोदी जलई गैर कण्डारा मोटर मार्ग का 4.00 कि.मी. लम्बाई में निर्माण कार्य स्वीकृत है। मार्ग निर्माण हेतु खण्ड द्वारा दो समरेखन बनाये गये है। समरेखन संख्या दो के तकनीकी दृष्टि से उपयुक्त न होने एवं ग्रामवासियों की असहमति भी होने के कारण निर्माण खण्ड लो0नि0वि0 ऊखीमठ द्वारा समरेखन संख्या एक के अनुसार मार्ग के निर्माण का प्रस्ताव है। प्रस्तावित समरेखन बांसवाड़ा चन्द्रनगर मोहनखाल मोटरमार्ग के कि.मी. 3 (हैक्टा 2 से 4) से हिल साईड में आरम्भ होता है। लगभग 2.1 कि.मी. लम्बाई पूर्ण करने के बाद यह परकण्डी जलई कण्डारा मोटरमार्ग से जुड़ता है। इसके बाद 1.625 कि.मी. लम्बाई में परकण्डी जलई कण्डारा मोटरमार्ग का अनुसरण किया गया है। स्वीकृत 4.00 कि.मी. लम्बाई में से शेष 1.9 कि.मी. लम्बाई में गैर गांव से जलई गांव की ओर समरेखन प्रस्तावित किया गया है। इस प्रकार प्रस्तावित समरेखन (2.1 कि.मी. तथा 1.9 कि.मी.) दो अलग–अलग भाग में है। समरेखन की प्रथम 2.1 कि.मी. लम्बाई वन पंचायत भूमि से गुजरती है, जिसमें चैनेज 0.275, 0.875 तथा 1.65 कि.मी. में कुल तीन एच. पी. बैण्ड्स दिये गये हैं। शेष 1.9 कि.मी. लम्बाई नाप भूमि से गुजरती है, जिसमें चार एच. पी. बैण्ड्स हैं जो चैनेज 4.250, 4.500, 5.050 तथा 5.100 में दिये गये है। बाद के दो बैण्ड्स अत्यधिक पास–पास हैं। नाप भूमि की तुलना में वन पंचायत भूमि में पहाड़ी ढलान अपेक्षाकृत तीव्र है। अतः इस भाग में मार्ग कटान में सावधानी अपेक्षित होगी। समरेखन क्षेत्र में शिस्ट तथा क्वार्टजाईट चट्टान है तथा नाप भूमि में मिट्टी / डेब्री है।

3. समरेखन क्षेत्र की भूगर्भीय स्थिति, भू–आकृति एवं उक्त प्रस्तर में वर्णित तथ्यों को ध्यान में रखते हुये निम्न सुझाव दिये जा रहे है, जिन्हे प्रस्तावित मार्ग निर्माण में सम्मिलित किया जाना आवश्यक है।

(क) यथासम्भव मार्ग की पूरी चौडाई कटान करके प्राप्त की जाये। यह भविष्य में मार्ग की स्थिरता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। जहॉ रिटेनिंग दीवार का निर्माण अपरिहार्य हो वहॉ इनका निर्माण फर्म स्ट्रेटा पर समुचित परिकल्पना के आधार पर कराया जाये।

(ख) मार्ग के आरम्भ में टेक आफ प्वाइन्ट कम ढलान युक्त स्थिर भूमि में सावधानीपूर्वक बनाया जाये।

(ग) यह सुनिश्चित किया जाये कि समरेखन मे प्रस्तावित हेयर पिन बैण्ड कम ढलान युक्त स्थिर भूमि में बनाये जाये। पास–पास बैण्डस के मध्य यथासम्भव दूरी बढाई जाये तथा एक के ऊपर दूसरा बैण्ड न बनाया जाये।

प्रमाणित किया जाता है

सहायक अभियन्ता
निर्माण खण्ड लो0नि0 वि0
ऊखीमठ (रूद्रप्रयाग)

(घ) तीव्र ढलान में मार्ग की एक से अधिक आर्म्स की स्थिति को avoid किया जाये अन्यथा फर्म स्ट्रेटा न होने की स्थिति मे मार्ग के कटान के बाद स्थानीय भूस्खलन होने तथा मार्ग के क्षतिग्रस्त होने की सम्भावना हो सकती है।

(ड.) समरेखन के समीप स्थित घरों से सुरक्षित दूरी रखते हुये बिना विस्फोटको का प्रयोग किये सावधानीपूर्वक मार्ग कटान किया जाये।

(च) समरेखन में तीव्र पहाड़ी ढलान वाले भाग को यथासम्भव बचाया जाये, अन्यथा उस भाग में सावधानीपूर्वक मार्ग कटान किया जाये जिससे कोई अस्थिरता उत्पन्न न हो।

(छ) जहाँ मार्ग कटान की ऊंचाई अधिक हो और स्ट्रेटा कमजोर हो, आवश्यक होने पर मार्ग कटान के साथ–साथ समुचित ब्रेस्ट वाल का निर्माण कराया जाये।

(ज) जहाँ आवश्यक हो मार्ग से ऊपर व नीचे पहाड़ी ढलान पर समुचित पौधों का रोपण किया जाये, जिससे ढलानों पर भूक्षरण की प्रकिया को नियंत्रित रखा जा सके।

(झ) वर्षा के पानी की समुचित निकासी हेतु रोडसाईड ड्रेन एवं स्कपर का प्रावधान किया जायें। यह भी सुनिश्चित किया जाये कि स्कपर के पानी से भूक्षरण न हो।

(ण) पर्वतीय क्षेत्र में मार्ग निर्माण के लिये निर्धारित सिविल अभियांत्रिकी के अन्य मानको एवं विशिष्टियों का भी पालन किया जाये।

4. मार्ग के नवनिर्माण विषयक स्थायित्व सम्बंधी बिन्दुः–

(i) मार्ग कटान के पश्चात हिल साईड में जिस स्थान पर over burden material होगा तथा पहाडी ढलान slope forming material के angle of repose से अधिक होगा उस भाग में वर्षाकाल में पहाडी ढलान के अस्थिर होने की सम्भावना हो सकती हैं।

(ii) समरेखन में एक ही हिल फेस पर नियोजित किये गये हेयर पिन बैण्ड्स पास–पास होने की स्थिति में मार्ग की आर्म्स के मध्य दूरी कम रहेगी। तीव्र ढलान पर over burden material होने की स्थिति में विपरीत परिस्थितियों में ढलान के अस्थिर होने की सम्भावना हो सकती है।

5. बांसवाड़ा से किरोदी जलई गैर कण्डारा मोटरमार्ग हेतु 4.00 कि.मी. लम्बाई का प्रस्तावित समरेखन वर्तमान परिस्थितियों सुझावों के साथ मार्ग निर्माण के लिये उपयुक्त प्रतीत होता है। इस हेतु प्रस्तावित भूमि भूगर्भीय दृष्टि से उपयुक्त है।

टिप्पणीः–

(1) भूमि हस्तातरण की दृष्टि से समरेखन क्षेत्र में किये गये निरीक्षण एवं खण्ड द्वारा उपलब्ध कराये गये सर्वेक्षण विवरण के आधार पर यह एक जनरलाइज्ड आख्या है। मार्ग कटान के पश्चात् स्थिति में परिवर्तन भी सम्भव है। समरेखन/मार्ग पर किसी विशिष्ट बिन्दु पर यदि सुझाव की आवश्यकता हो तो उसे अलग अवगत कराया जाये।

(2) मुख्य अभियन्ता स्तर'1 लो0 नि0 वि0, देहरादून द्वारा समस्त अधीक्षण अभियन्ताओं को मार्गो के निर्माण एवं समरेखन निर्धारण के सम्बन्ध में प्रेषित पत्रांक 7272/8(1)याता0–उ0/ 05 दिनांक 16.11.2005 में दिये गये निर्देशों का भी अनुपालन किया जाये।

प्रमाणित द्वारा

सहायक अभियन्ता
निर्माण खण्ड लो0नि0 वि0
ऊखीमठ (रूद्रप्रयाग)

H. Kumar
20.3.09
भूवैज्ञानिक
कार्यालय मुख्य अभि. स्तर-I
लो0नि0वि0 उत्तरांचल
देहरादून